Vol. 3, No. 1 (January 2014) P. 12-17 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

निम्बार्क सम्प्रदाय की संगीत गायन परम्परा

डा0 प्रीति गुप्ता
सम्भल, उत्तर प्रदेश
Email ; soniya.sanjay316@yahoo.com

गायन शैली व समाज गान पद्धति

ब्रज के विभिन्न सम्प्रदायों में प्राचीनतम माने जाने वाले निम्बार्क सम्प्रदाय में भी समाज गायन की परम्पराये हैं। निम्बार्क सम्प्रदाय के आदि आचार्य एवं प्रतिष्ठाता श्री निम्बार्काचार्य माने जाते है। इस सम्प्रदाय की कीर्तन व्यवस्था भी समाज गान से अभिहित की जाती है।
महावाणी में कहा गया है :–

मोहन मंदिन चौक में, मिलि सब सखी समाज।
बीन बजावहिं, गावहिं, मधुर–मधुर सुर साज।।[1]
बजत बधाई महल में आई सखी समाज।[2]
मंगल साज समाज सौं गावत मंगल गीत''[3]
''सुनियो रे आज नचावै नन्द को हिलि मिलि सकलसमाज''[4]

निम्बार्क सम्प्रदाय के पदों में जहाँ पर श्री युगल प्रिया का सखियों द्वारा गायन हुआ हैं वहाँ पर सखियों के अनेक समूह श्री लाडली लाल की प्रशंसा में गाते हुए द्रष्टव्य है यथा –

''गौवन आगे सखिन जूथ में राधा दुलहिन लाल गवाती''[5]
''तारि दै दै गावै गारी मिलि सब गौरीं''[6]

निम्बार्क सम्प्रदाय में समाज गायन की परम्परा अति प्राचीन है। इस सम्प्रदाय के प्रमुख गायनाचार्यो में श्री भट्टदेवाचार्य, श्री हरिव्यासदेवाचार्य, श्री रूप रूसिक देवाचार्य आदि है। जगद्गुरू निम्बार्काचार्य की परम्परा में आदि वाणी ब्रज भाषा काव्य के रूप में विख्यात तथा निम्बार्क सम्प्रदाय के ही आचार्य कोटि के कवि भट्ट देवाचार्य ''युगल शतक'' नामक काव्यात्मक ग्रन्थ संगीत का कोश है। इसके सभी पद राग रागनियों में बंधे हुए है तथा जो संगीत के समाजियों द्वारा प्रायः समय–समय पर गाये जाते है। श्री हरिव्यासदेवाचार्य द्वारा रचित 'महावाणी' के पदों का गायन भी संगीत समाज प्रेमियों द्वारा किया जाता है। ''यह सुनिश्चित किया जाता है कि निम्बार्क सम्प्रदाय में संगीत गायन की परम्परा श्री भट्ट जी के समय से ही आरम्भ हो गयी थी जो उनसे पूर्व भी अवश्य रही होगी।''[7] सर्वेश्वर मन्दिर सलेमाबाद (कृष्णगढ़) मन्दिर में निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री भट्ट जी या श्री हरिव्यास जी देवाचार्य ने अथवा उनके शिष्य प्रशिष्यों ने कभी समाजगान का आयोजन किया था – साम्प्रदायिक साहित्य या अन्य किसी भी ग्रन्थ में इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। वृन्दावन में आज से लगभग साठ–सत्तर वर्ष पूर्व से इस सम्प्रदाय के मठ मन्दिरों में भी समाजगान किया जाने लगा है।''[8]

समाज गायन से तात्पर्य संगीत के कतिपय गायकों का ऐसा समूह जो मंदिरों में अथवा उत्सव–महोत्सवों पर एक साथ बैठकर अनेक वाद्यों के साथ ब्रज वाणियों का गायन करता है। भगवान

की सेवा में उत्कृष्टता और रोचकता लाने के लिए समयानुसार विधिक उत्सव मनाये जाते है, बसन्त आदि ऋतुओं के अनुरूप त्यौहार मानाये जाते हैं। वैसे ही उत्सवों की लीला मनाई जाती है। उत्सव सामूहिक रूप में होते हैं जिनमें सेवक–समूह तत्कालीन उत्सव लीला के अनुसार पूर्वाचार्यों की वाणियों का गायन करता है। उत्सव के अनुसार ही ठाकुर जी का श्रृंगार एवं सेवा की जाती है। ''मृदंग, तम्बूरा, सितार आदि की मन्द ध्वनि में मुक्तकंठ से राग–रागिनी प्रवाहित होती रहती है। सम्प्रदाय में इस विधि को 'समाज' कहते है। ऐसी समाज कई दिन तक भी चलती है।''[9] ''समाज गान में ध्रवपद एवं धमार गान शैलियों का प्राधान्य है।''[10] प्रायः सभी आचार्यो की वाणियों में धमार, धमारि चांचरि आदि संज्ञाएं गीत, नृत्य, एवं ताल भेदों के रूपो में विशेषत होली प्रसंग सम्बन्धी पदों में प्रयुक्त हुई है। जैसे –

''गावत होरि गारि, सजि मृदंग डफ झांझरी।''[11]
''चर्चरी में चांचरि मचाई रंग रात।''[12]

होली सम्बन्धी विभिन्न पदों में विभिन्न वाद्ययन्त्रों का नामोल्लेख हुआ है यथा, डफ, बीन, बांसुरी, मृदंग, ढोलक, सारंगी, शहनाई आदि। जैसे–

''बाजे डफ ताल बीन बासुंरी मृदंग
महुवरि ढोलकि ढोल सारंगी अरू सहनाई।।''[13]

निम्बार्क सम्प्रदाय में समाज गायन का स्वरूप साधारण रूप से बैठकर होता है। प्रमुख गायक विग्रह के सामने बैठकर अपने अन्य सहयोगियों के साथ गायन करता है।

''निम्बार्क सम्प्रदाय के वर्तमान समाज गायको में श्री महन्त रूप किशोरदास जी वृन्दावन के मुखिया जी के नाम से विख्यात है। इन्हे संगीत शाश्वत एवं गायन का पूर्ण ज्ञान है।''[14]

''वर्तमान में इस समाज के मुखिया प्रेमदास जी निम्बार्कीय है।''[15]

अंजू शर्मा जी ने जब शोध किया तब श्री महन्त रूप किशोरदास जी मुखिया होगें क्योंकि उनका शोध 1996 का है किन्तु किशोरीशरण अलि जी ने अपनी पुस्तक में वर्तमान मुखिया प्रेमदास जी निम्बार्कीय बताये हैं इनकी पुस्तक का संस्करण 2000 का है इसलिए हम यह कह सकते हैं वर्तमान में प्रेमदास जी निम्बार्कीय समाज के मुखिया हैं। इस परम्परा के वर्तमान जगद्गुरू निम्बार्काचार्य जी श्रीराधा सर्वेश्वरशरणदेवाचार्य है जो संगीत शास्त्र के न केवल ज्ञाता है वरन् उच्चकोटि के गायक भी हैं। ''–उनसे साक्षात्कार होने पर उन्होंने हमें बताया कि निम्बार्क सम्प्रदाय में गायन की दो शैलियाँ प्रसिद्ध है। (1) ध्रुपद (2) धमार/ख्याल पद्धति भी निम्बार्क सम्प्रदाय की गायन शैली है किन्तु वह सिर्फ सरल पद रचनाओं के लिए प्रयोग की जाती है किन्तु समाज गायन के लिए ध्रपद धमार शैली ही प्रयोग में आती है। उन्होंने हमें बताया कि निम्बार्क सम्प्रदाय में पदों की प्रत्येक पंक्ति को पहले धीमी लय में फिर द्रुत लय में और अन्त में फिर से धीमी लय में गाते हैं। समाजगान में तान का प्रयोग वर्जित होता है। आज भी निम्बार्क सम्प्रदाय के मन्दिरों में जितने भी उत्सव होते हैं उन सभी अवसरों पर समाज गान होता है परन्तु प्राचीन परंपरा के अनुसार दैनिक अष्टयाम सेवा में अब समाज गान नहीं होता है। पद गायन में भी राग विशेष अनुसार गाना अनिवार्य नहीं रह गया है।''[16]

निम्बार्क सम्प्रदाय के भक्त कवियों के पदो में सांगीतिक तत्व

निम्बार्क सम्प्रदाय में ध्रुपद व धमार शैली में समाज गायन करने की प्रथा थी। संगीत के विशेष आचार्यो में श्री भट्टदेवाचार्य जी, श्रीहरिव्यासदेवाचार्य जी, श्री रूपरसिक जी तथा वृन्दावन जी के नाम उल्लेखनीय हैं श्री भट्ट जी ने सर्वप्रथम श्रीनिम्बार्क के शिष्यों में से ब्रजभाषा की कविता की इनका

प्रसिद्ध ग्रन्थ 'युगल शतक' 'आदिवाणी' के नाम से विख्यात है। भक्त कवियो के पदों में राग व तालों के नाम प्राप्त होते हैं।

''जै जै सुर करताल बजावै, गीन वाद्य सुर चाल मिलावे।'' हरिराम व्यास जी की 'महावाणी' ग्रन्थ के पदों के शीर्ष पर रागों व तालों का कोई उल्लेख नहीं मिलता बल्कि पदों में स्थान–स्थान पर रागों के नाम दिये गये हैं। निम्नपद में श्रीप्रियाप्रियतम के 'व्याहुले' पर अनेक रागों के नामों का उल्लेख प्राप्त होता है–

''सुमख भैरव राग उचार। दिविगंधार है देवगंधार।। रत्नकला सो रामकली पुनी। ललिताननना ललित रागनि गुनि।। विस्वामा विभास कहिये कल अरू विलास आवलि जु बिलाबला। आनंदा आसावरी जानहु। सुरंग अंग सारंगाहि मानहु।। गौरमुखी गौरी को जान। कैलिकौमुदी कहि कल्यान।। कर्नकांतिका सौ कान्हरो और कहूं जो उर में धरौ।। अलबेलि केलि अड़ानो कहिये। विचित्र सोभा बिहागरौ लहिये।। कन्द्रपकामा सोरठ सोई। बैजयंति बसंत है जोई।। किसोर सुन्दरी काफी सोहें। धनिभागा जु धनासिरी जोहें।। जयति सोभना जयति सिरि पुनि। आनंद सिंधुन आसांसिधुनि।। चित्रमुखी सौ गौरी चेती। सुक्त माल मलार समझैती।। सुरंग–माल सारंग मलार। लहरि मालहूं यह उरधार।। माला लहरि सु लूहरिवाक। अर्क बिंदु कहिये ऐराक।। टहल तत्परा टोड़ी जानो। मार मोहनी मारू मानी।।''[17]

उपरोक्त पद में व्यास जी ने भैरव ललित, विभास, विलावल, रामकली, देवगंधार, आसावरी, गौरी, कल्याण, कान्हड़ा, अड़ाना, बिहागड़ा, केदार, सोरठ, बसन्त, काफी, धनाश्री, मलार, तोड़ी, मारू आदि रागों का प्रयोग किया है। इसी प्रकार आचार्य वृन्दावन जी ने भी चौपाईयों में छः राग तथा छतीस रागिनियों का प्रयोग किया है–

'श्री पंचम भैरव जु वसन्त। पंचवों मेघहु राग लसन्त।।
'नटनारायण छटवीं कह्यो। महादेव मत सौ इह लह्यो।।
अब इनकी रागिनी सुन लीजै। छहुनि नामानि मन लीजै।।
मालन त्रिवन गौरी केदारा। मधु माधुव पहरो श्री दाता।।[18]
'मालसिरि पटमंजरी भूपली रू विभास।
कर्णीटी बड़ हस षट् स्त्री पंचम के पास[19]
'भैरवी अरू गूजरी रेवा। बंगाली बहुली करै सेवा।
छट्टी गुणकरी है भैरों की। नारी सुनौ अब तुम औरों की।।
देशी देवगिरी बैरारी। तोड़ी ललित हिंडोल जु नारी।।
ये बसन्त की छहों पियारी। अब सुनौ मेघ राग की नारी।।[20]
'हरिसंगार गाँधार अरूतीजी कही मलार।
साविर सोरठ कौशिकी एजु छहौं सुकुमार।।
आभीरी सारंग अद कमोद कल्यान।
तिन में छठी हमीर तिय नट नारायण जान।।[21]

अतः इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि निम्बार्क सम्प्रदाय के भक्त कवि राग–रागिनी में भी पूर्णतः परिचित थे क्योंकि उपरोक्त लिखित छः राग तथा उसकी छत्तीस रागिनियाँ 'शिवमत' के अन्तर्गत आती हैं।''[22]

निम्बार्क सम्प्रदाय के अन्य भक्त संगीतज्ञों की अपेक्षा वृन्दावनदेव जी ने अधिक पदों की रचना की है। 'गीतामृत गंगा' में एक स्थान पर 'ध्रुपद' शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है और इस पद में कहा गया है कि ऐसा ध्रुपद गाओ कि तन–मन की सुध–बुध ही न रहे–

''तन मन सुधि रहे नाहि री तापर ध्रुपद गाओ।'[23]

इसी प्रकार होरी के पद में धमार शब्द का भी प्रयोग मिलता है –

''डफहिं बजावति गांवति चाँचरि गारि धमारिन धूम परी''[24] इससे स्पष्ट होता है कि निम्बार्क सम्प्रदाय में भी ध्रुपद और धमार गायन शैली प्रमुख थी।

भक्त कवियों ने अपने पदों में रागों के नाम के साथ–ही–साथ ताल का भी उल्लेख किया है –

'चलत चर्चरी चाल में घटि बढ़ि होत न रंच[25]
'सावधान सुर सप्त सरिगमप धनि लगाई धुनि रहे इकताल[26]
'चर्चरी में चांचरि मचाई रंग रात[27]

तालों के साथ–साथ हाथ से ताली देना भी अति आवश्यक बताया गया है–

'तारी दै दै गावैं गारी मिलि सब गोरी[28]
' .....नाचत दै करतार[29]

संगीत में ताल का महत्व बताते हुए वृन्दावन देव जी ने कहा है –

''स्वर समूहपद में धरै ताल सहित गुन गाँन
गावै धीरज धरि हियें कहैं गांधर्व सुजान।।'[30]

भक्त कवियों के पदो में स्थान–स्थान पर गायन, वादन तथा नृत्य से सम्बन्धित कुछ सांगीतिक शब्द भी प्राप्त होते हैः–

''बरज जमावै सरस बतावैं गावैं मिलि जुगल बिहार'[31]
''जै जै सुर करताल बजावै, गीन वाद्य सुर चाल मिलावै।'[32]
''सा रि ग म प ध नि प नी ग म प ध नी न न न'[33]
''राग रंग तान मान गान मधुर सप्त सुरन'[34]

सभी कवियों के पदों में ग्राम श्रुति, मूच्छेना, तीन सप्तक जातियों, सप्तसुर, तान आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है–

'ग्राम तीन एहें कहैं, मन्द्र मध्य अरू तार।[35]
'निषाद ऋषम गान्धार अरू मध्य धैवत पांच।
पंचम षड़्ज ये द्वै मिलैं होहिं, सप्तसुर सांच।।[36]
'श्रुति मूर्च्छना तान मान मिलोई[37]
'बंसी बजावैं ग्राम जमावैं, कल सुर अधिक चड़ाय[38]

इस भक्त कवियों के पदों में वाद्य के चारों प्रकारों का वर्णन बहुत ही सुन्दरता से किया गया है। यहां तक कि वृन्दावनदेव जी ने तो चारों प्रकार के वाद्यों में पृथक–पृथक यह भी बताया है कि किस श्रेणी में कौन से वाद्य आते हैं।

''तत आनद्ध सुषिर घन बाजे चारि प्रकार
.....रबाब बीन कौं आदि तत बजैं तॉति तरूतार।।
मृंदगादि आनद्ध ए जै अब मंढ़ै है खाल।
सुषिर बजैं जे फूंक सौं ते बजये गोपाल।।
ताल झोंझिन को आदि जे घन कहि इन इन नाम।
'आनद्ध घन पर पुहंनि में बजै न राग सरूप।

बाजत तत अरू सुषिर में मूरित वन्त अनूप'[39]

साथ ही साथ वाद्यों का तथा मृदंग तथा पखावज पर बजने वाले बोलों का भी प्रयोग पदों में किया गया है –

'धिधिताँ धिधितां बाजै मृदंग देखि कौन राचै री[40]
'ठं ठं ठननन धुद्ध धु धु कट ताल मृंदगनि नाद हिते[41]
'कु कु कु झु कु कु कु झु कु कु झनन
झीमां जीमां द्रीमां द्रीमां मृदंग घौरै[42]

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि गायन के साथ ही साथ वादन का भी ज्ञान कौशल इन भक्त कवियों को था। इसके साथ ही साथ नृत्य की नई–नई मुद्राओं तथा नृत्य के विभिन्न बोलों का प्रयोग कर इन्होंने अपनी नृत्य कुशलता का भी परिचय दिया है –

'तत किटि थौं किटि तकि थौं थौं उघटत मोहन नाचत प्यारी।
तक कुक नगत कि कि कि धिथ्या उघटै विहारनि नाचैं बिहारी।
झि झि झि झि रिमिझिमि रूण झण नन नूपर झणकारी।'[43]
'निपुन हस्तक भेद भास भू विलास मंद हास[44]
'लग ग ग ग गग ग ग गति में गति अति अगाधे[45]

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि अन्य सम्प्रदायों की भाँति ही निम्बार्क सम्प्रदाय में भी संगीत का महत्व अधिक था। इनकी उपासना का स्वरूप अष्टयाम या नैमित्तिम सेवा भी संगीत के माध्यम से ही होती है। काल परिवर्तन के कारण यह तो सत्य ही है कि प्राचीन काल के समाज गायन में आज के समाज गायन में परिवर्तन आ गया है किन्तु आज भी प्राचीन गायन शैलियों के अनुसार ही ध्रुपद–धमार में ही पदों का गायन किया जाता है। बाद्यों में भी अन्तर आया है। प्राचीन में जहां समाज गायन के साथ मृदंग, पखावज, झाँझ आदि बजते थे, वहाँ मृदंग व पखावज का स्थान आज तबले ने ले लिया है तथा साथ में हारमोनियम भी बजाया जाता है। किन्तु प्राचीन भक्त कवियों ने रागरागिनी पद्धति, ग्राम, मूर्च्छना, ताल के भेद तथा नृत्य का वर्णन तथा समयानुसार तथा ऋतुनुकूल रागों में पदों को बद्ध किया है। रास के पदों में इन सब आचार्यो ने संगीत के तीनों अंगों नृत्य, गायन, वादन पर अपनी संगीत कला का कौशल दिखाया है। आज भी अधिकांश रासमंडलियाँ निम्बार्क सम्प्रदाय की ही हैं। वृन्दावनदेव जी ने जीवन में संगीत का महत्व बताते हुए कहा है कि –

''नहीं गीत या बिन कछू नातै इह है नित्य।।
उठत वायु ते नाद हैं बाते सुर संघात
सुर तै उपजत राग, सुनि, जन विहल हवै जात।।
याही तै कलि काल में सब साधन में मुख्य।
कह्यौ कीर्तन व्यास शुक, ज्यौ नछत्र में पुष्प।
बातै मुखि गान्धर्वयुत, करै गान जो कोई।
इत मुख लै अनायास सौ हरिपद पहुंचे सोइ।'[46]

संगीत बिना इस संसार में कुछ नहीं है। सारा ब्रह्माण्ड संगीत मय है और इस संगीत साधन से ही भक्त प्रभु के अति निकट पहुँचता है।

****

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1 महावाणी दोहा नं0 5, श्री हरिव्यास देवाचार्य, पृष्ठ सं0 67
2 वही दोहा नं0 110 पृष्ठ सं0 138
3 श्री वृहदुत्सव मणिमाल, पर 168 पृष्ठ सं0 67 श्री रूपरसिक
4 वही पर 170 पृष्ठ सं0 69
5 श्री श्री भट्टेवाचार्य और उनका युगल शतक पृष्ठ सं0 47
6 श्री बृहदुत्सव मणिमाल, श्री रूपरसिक पद 42, पृष्ठ सं0 17
7 ब्रज संस्कृति में संगीत – अंजू शर्मा पृष्ठ सं0 198
8 हिन्दी भक्ति काव्य में रसभक्ति धारा और उसका वाणी साहित्य (II) किशोरीशरण 'अलि' पृष्ठ सं0 434
9 निम्बार्क सम्प्रदाय और उसके कृष्ण–भक्त हिन्दी कवि–नारायण दत्त शर्मा पृष्ठ सं0 131
10 हिन्दुस्तानी संगीत में होली गान, आरती श्रीवास्तव पृष्ठ सं0 54
11 श्री बृहदुत्सव मणिमाल – श्रीरूपरसिक देवाचार्य पृष्ठ सं0 14 पद सं0 40
12 वही पृष्ठ सं0 25
13 वही पृष्ठ सं0 25
14 ब्रज संस्कृति में संगीत – अंजू शर्मा पृष्ठ सं0 198
15 हि0भ0का0 रसभक्ति धारा और उसका वाणी साहित्य किशोरीशरण अलि पृष्ठ सं0 434
16 वर्तमान निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी से साक्षात्कार के अनुसार
17 महावाणी – हरिव्यास जी पर 38 पृष्ठ सं0 325
18 गीतामृत गंगा आचार्य वृन्दावनदेव जी पृष्ठ सं0 97 (दोहा)
19 वही चौपाई पृष्ठ सं0 97
20 वही चौपाई 17–18 पृष्ठ 97–98
21 वही (दोहा) 19, 20 पृष्ठ सं0 98
22 संगीत दर्पण – दामोदार पंडित श्लोक 13–19 पृष्ठ 74–75
23 गीतामृत गंगा पद 13–18 पृष्ठ सं 20
24 महावाणी – श्रीहरिव्यास जी पद – 27 पृष्ठ सं0 68
25 वही, पद – 33 पृष्ठ – 80
26 वही पद – 58 पृष्ठ – 221
27 श्री वृहदुत्सव मणिमाल – श्रीरूपरासक पद – 58, पृष्ठ – 25
28 वही, पद – 42 पृष्ठ – 17
29 वही, पद – 170 पृष्ठ सं0 69
30 गीतामृत गंगा श्री वृन्दावनदेवजी दोहा – 3 पृष्ठ सं0 97
31 श्री श्री भट्टदेवाचार्य और उनका युगल शतक पद– 24 पृष्ठ सं0 95
32 वही पद –39 पृष्ठ 91
33 महावाणी श्री हरिव्यास जी पद – 133 पृष्ठ सं0 157
34 वही पद – 133 पृष्ठ सं0 156
35 गीतामृत गंगा – आचार्य वृन्दावनदेव जी दोहा–13 पृष्ठ सं0 97
36 वही दोहा –9 पृष्ठ सं0 97
37 वही, पद –17 पृष्ठ सं0 38
38 श्री वृहदुत्सव मणिमाल – रूपरासक जी – पद 113 पृष्ठ सं0 45
39 गीतामृत गंगा आचार्य वृन्दावन देव जी देहा –30–33 पृष्ठ सं0 98
40 वही पद – 9 पृष्ठ सं0 36
41 वही पद – 5 पृष्ठ सं0 35
42 महावाणी श्री हरिव्यास जी – पद 134 पृष्ठ सं0 157
43 गीतामृत गंगा –आचार्य वृन्दावनदेव जी पद–5 पृष्ठ सं0 35
44 महावाणी श्री हरिव्यास पद – 132 पृष्ठ सं0 156
45 महावाणी श्री हरिव्यास, पद–135 पृष्ठ सं0 158
46 पीतामृत गंगा – श्रीवृन्दावनदेव जी दोहा 5–8 पृष्ठ सं0 97